डॉ. जयवीर त्यागी
निदेशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
जलविज्ञान भवन
रूड़की – 247 667 (उत्तराखंड)

निदेशक की कलम से.....

मुझे यह कहते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है कि विगत वर्षो की भांति इस वर्ष भी हिंदी दिवस के गरिमामय अवसर पर हमारे संस्थान की वार्षिक हिंदी पत्रिका ''प्रवाहिनी'' के 28वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। सर्वविदित है कि आज कोविड–19 की वैश्विक महामारी ने हमारे सम्मुख अनेक चुनौतियां प्रस्तुत की हैं और इन विषम परिस्थितियों ने हमारी जीवन–शैली और दिनचर्या को बदलकर रख दिया है, फिर भी हमने हालातों से समन्वय बनाकर आगे बढ़ने के सार्थक प्रयास किए हैं। हालांकि मौजूदा समय में इसका प्रकोप कुछ कम होता हुआ दिख रहा है, फिर भी खतरा अभी पूरी तरह से टला नहीं है। इसलिए हमें निरंतर सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आज कोरोना महामारी के कारण पैदा हुई प्रतिकूल परिस्थितियों के चलते हर क्षेत्र की गतिविधियों में थोड़ा विराम अवश्य लगा है, लेकिन फिर भी धीरे–धीरे सभी कार्य किए जा रहे हैं। इस दौरान हमने अन्य सरकारी कामकाज के साथ–साथ संस्थान की राजभाषा संबंधी गतिविधियों को भी सरकारी प्रोटोकॉल और दिशा–निर्देशों का समुचित अनुपालन सुनिश्चित करते हुए सुचारू रूप से जारी रखा है। प्रस्तुत अंक में संस्थान के ही नहीं अपितु विभागेत्तर रचनाकारों के लेखों को भी प्रकाशित किया जा रहा है। रचनाओं की भाषा सरल तथा सहज रखने का प्रयास किया गया है ताकि हर वर्ग का पाठक इससे लाभान्वित हो सके। आशा है यह अंक समस्त सुधी पाठकों को रोचक एवं उपयोगी लगेगा।

मुझे यह बताते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावशाली बनाने के लिए कई प्रोत्साहन योजनाएं लागू की गई हैं। राजभाषा हिंदी का प्रगामी प्रयोग एवं प्रचार–प्रसार प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना के द्वारा किया जाता है। संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिंदी लेखन रुचि में निरंतर वृद्धि हो रही है और वे न केवल प्रशासनिक कार्यों में अपितु तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रकृति के कार्यों में भी राजभाषा हिंदी का समुचित प्रयोग कर रहे हैं। मैं इस पत्रिका के माध्यम से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह करना चाहूंगा कि वे राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन में बढ़–चढ़कर योगदान दें ताकि सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी यूं ही फलती–फूलती रहे। सरकारी कार्यालयों द्वारा हिंदी पत्रिकाओं के प्रकाशन से कार्यालय में हिंदी में कामकाज किए जाने को अपेक्षित बल एवं समुचित प्रेरणा मिलती है। इससे सरकार की राजभाषा नीति के समुचित कार्यान्वयन को भी बढ़ावा मिलता है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के जरिए पदाधिकारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति अभिरुचि और जागरूकता बढ़ेगी।

इस पत्रिका के संपादन एवं प्रकाशन कार्यों से जुड़े सभी पदाधिकारी तथा विद्वत लेखकगण धन्यवाद के पात्र हैं। मैं पत्रिका की अपार सफलता एवं श्रीवृद्धि की मंगल कामना करता हूं।

(जयवीर त्यागी)